कहीं पर निगाहें कहीं पर निशाना

विकास नारायण राय

सीबीआई ने मोदी जिंदाबाद
और ममता मुर्दाबाद किया
इस तरह संविधान की
आतंकियों से
और कश्मीर की
पाकिस्तानियों से
रक्षा की गयी
इस तरह
सर्जिकल स्ट्राइक का
औचित्य स्थापित हुआ
इस तरह
दीवालिया अंबानी
जन्म जन्मांतर के लिए
राफ़ेल का ठेकेदार
सुनिश्चित हुआ

इस तरह
और बहुत कुछ तय हुआ
कि असम और मिज़ोरम को जलवाकर
किसे दी जाएगी नागरिकता
कि रेल दुर्घटना में मरवाकर
कहाँ चलायेंगे बुलेट ट्रेन
किसे पुलिस से पिटवायेंगे
और गौ रक्षा में मरवायेंगे
किसे गंगा की सफ़ाई से
या राम मंदिर से उलझायेंगे
बेहद ज़रूरी यह भी तय हुआ
कि सारी घोषणाएँ आज ही होंगी
जिनके नतीजे आयेंगे 2025 में

पीठ थपथपाई गयी
कहा गया कि
यह हुई न बात
कि संसद हिली
कि मीडिया डुली
सुप्रीम कोर्ट जगी
कि ममता भगी
जो शरण में आयी वह सगी
यानी मोदी को
चैन की नींद लगी

और भी कहा गया बहुत कुछ
सीबीआई के ही नाम पर
पिंजरे में बंद तोता कहा गया
आज़ादी के लिये रोता कहा गया
पहले भी कहा गया था
आगे भी कहा जाना है
बस वही नहीं कहा गया
जो न कहना न कहाना है
बेशक खेल सारा
जाना-पहचाना है
कि कहीं पर निगाहें हैं
कहीं पर निशाना है

यह सप्ताह / लक्ष्य और सफलता

कोलंबा कालीधर

एक बार एक आदमी सड़क पर सुबह सुबह दौड़ लगा रहा था, अचानक एक चौराहे पर जाकर जाकर वो रुक गया उस चौराहे पे चार सड़क थीं जो अलग रस्ते पे जाती थीं। एक बूढ़े व्यक्ति से उस आदमी ने पूछा – सर ये रास्ता कहाँ जाता है ? बूढ़े व्यक्ति ने पूछा- आपको कहाँ जाना है? आदमी – पता नहीं, बूढ़ा व्यक्ति – तो कोई भी रास्ता चुन लो क्या फर्क पड़ता है। वो आदमी उसकी बात को सुनकर नि:शब्द सा रह गया, कितनी सच्चाई छिपी थी उस बूढ़े व्यक्ति की बातों में।

सही ही तो कहा जब हमारी कोई मंजिल ही नहीं है तो जीवन भर भटकते ही रहना है। जीवन में बिना लक्ष्य के काम करने वाले लोग हमेशा सफलता से दूर रह जाते हैं जबकि सच तो ये है कि तरह के लोग कभी सोचते ही नहीं कि उन्हें क्या करना है? हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में किये गए सर्वे की मानें तो जो छात्र अपना लक्ष्य बना कर चलते हैं वो बहुत जल्दी अपनी मंजिल को प्राप्त कर लेते हैं क्यूंकि उनकी उन्हें पता है कि उन्हें किस रास्ते पर जाना है।

अगर सफलता एक पौधा है तो लक्ष्य ऑक्सीजन है, आज हम बात करेंगे कि लक्ष्य कितना महत्वपूर्ण है? कितना जरुरी है लक्ष्य बनाना?

1. लक्ष्य एकाग्र बनाता है – अगर हमने अपने लक्ष्य का निर्धारण कर लिया है तो हमारा दिमाग दूसरी बातों में नहीं भटकेगा क्यूंकि हमें पता है कि हमें किस रास्ते पर जाना है? सोचिये अगर आपको धनुष बाण दे दिया जाये और आपको कोई लक्ष्य ना बताया जाये कि तीर कहाँ चलना है तो आप क्या करेंगे, कुछ नहीं। तो बिना लक्ष्य के किया हुआ काम व्यर्थ ही रहता है। कभी देखा है कि एक कांच का टुकड़ा धूप में किस तरह कागज को जला देता है, वो एकाग्रता से ही सम्भव है।

2. आपकी प्रगति का मापक है लक्ष्य- सोचिये कि आपको एक 500 पेज की किताब लिखनी है, अब आप रोज कुछ पेज लिखते हैं तो आपको पता होता है कि मैं कितने पेज लिख चुकी हूँ या कितने पेज लिखने बाकी हैं। इसी तरह लक्ष्य बनाकर आप अपनी प्रगति को माप सकते हैं और आप जान पाएंगे कि आप अपनी मंजिल के कितने करीब पहुंच चुके हैं। बिना लक्ष्य के ना ही आप ये जान पाएंगे कि आपने कितनी प्रगति की है और ना ही ये जान पाएंगे कि आप मंजिल से कितनी दूर हैं?

3. लक्ष्य आपको अविचलित रखेगा- लक्ष्य बनाने से हम मानसिक रूप से बंध से जाते हैं जिसकी वजह से हम फालतू की चीज़ों पर ध्यान नहीं देते और पूरा समय अपने काम को देते हैं। सोचिये आपका कोई मित्र विदेश से जा रहा हो और वो 9 बजे आपसे मिलने आ रहा हो और आप 8.30 बजे अपने ऑफिस से निकले और अगर स्टेशन जाने में 25-30 मिनट लगते हों तो आप जल्दी से स्टेशन की तरफ जायेंगे। सोचिये क्या आप रास्ते में कहीं किसी काम के लिए रुकेंगे? नहीं, क्यूंकि आपको पता है कि मुझे अपनी मंजिल पे जाने में कितना समय लगेगा। तो लक्ष्य बनाने से आपकी सोच पूरी तरह निर्धारित हो जाएगी और आप भटकेंगे नहीं।

4. लक्ष्य आपको प्रेरित करेगा – जब भी कोई व्यक्ति सफल होता हैं, अपनी मंजिल को पाता है तो एक लक्ष्य ही होता है जो उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। आपका लक्ष्य आपका सपना आपको उमंग और ऊर्जा से भरपूर रखता है।बिना लक्ष्य के आप कितनी भी मेहनत कर लो सब व्यर्थ ही रहेगा जब आप अपनी पूरी ऊर्जा किसी एक केंद्र एक लक्ष्य पर लगाओगे तो निश्चय ही सफलता आपके कदम चूमेगी।

गांधी का पुतला / दस कहानियां

असगर वजाहत

1.

गांधी के पुतले को यह समझ कर गोली मारी गई थी कि पुतले को मारी जा रही है। लेकिन गोली गांधी को लगी।

पुतले के पीछे से गांधी निकल आए। गोली मारने वालों ने कहा यह तो हमारे लिए बहुत खुशी की बात है कि गोली असली गांधी को लगी है । पर चिंता की बात यह है कि अगले साल जब हम पुतले को गोली मारेंगे तो उसके पीछे से गांधी कैसे निकलेगा ।

गांधी ने कहा तुम चिंता मत करो हर साल तुम पुतले को गोली मारना और हर साल उसके पीछे से गांधी निकलेगा।

2.

गांधीजी के पुतले को जब गोली मारी गई और खून बहने लगा तो अचानक सभा में कर्नल डायर(Colonel Rsginald Edward Harry Dyer 1864-1927) आ गया उसके चेहरे से खुशी फूटी पडती थी। उसने अंग्रेजी में गोली मारने वालों से कहा, वेल डन ....जो काम हमारा पूरा साम्राज्य नहीं कर सका वह काम तुम लोगों ने कर दिया है। हम तुम्हारे बड़े आभारी हैं। अगर कभी कोई काम हो तो बताना।

डायरके पीछे-पीछे ऊधम सिंह भी आ गए थे पर उन्हें कोई देख नहीं पाया।

3.

गांधी के पुतले पर गोली चलाने वालों ने सोचा कि उन्हें अधिक प्रामाणिक होना चाहिए। इतिहास बताता है की गोली लगने के बाद गांधी ने हे राम कहा था, इसलिए गोली चलाने वाले ने अपनों में से किसी आदमी से कहा कि गांधी के पुतले पर गोली लगते ही वह हे राम बोले। हे राम बोलने वाला तैयार हो गया। गोली चली, गांधी के लगी, खून बहा लेकिन हे राम कहने वाला, हे राम न बोल सका। वह केवल हे-हे करता रह गया।

4.

गांधी के पुतले पर गोली चली। पुतला गिर गया और देखा गया के पुतले के पीछे तो तमाम लोगों की लाशें पड़ी हैं।

पहचानने की कोशिश की गई तो पता चला कि वे चम्पारन के किसानों की लाशें हैं।

5.

गांधी के पुतले को जब गोली मारी गयी तब एक देववाणी हुई। आकाश से आवाज आई- अरे मूर्खों पुतले को क्या मार रहे हो। मारना ही है तो गांधी की आत्मा को मारो।

मारने वालों ने कहा- आत्मा क्या होती है हमें नहीं मालूम।

देववाणी ने कहा- आत्मा तो सबके अंदर होती है। तुम लोग भी आत्मा को खोज कर देखो ।

उन्होंने कहा- हमें नहीं मिलती। हम सौ साल से खोज रहे हैं।

6.

गांधी को गोली मारने वालों ने सोचा कि पुतले को कब तक गोली मारेंगे क्यों न उन लोगों को गोली मारी जाए जिन्होंने फिल्मों और नाटक में गांधी की भूमिकाएं की हैं । बस यह विचार आना था कि वे आनन-फानन में उन सब अभिनेताओं को पकड़ लाए जिन्होंने गांधी की भूमिका की थी।

उनसे कहा गया, तुम्हें गोली मार दी जाएगी क्योंकि तुम गांधी बने थे।

उन्होंने कहा ठीक है लेकिन हमें गोली मारने वाले गोडसे होंगें न... क्या उन्हें फांसी पर लटकाया जाएगा?

7.

पहले तो मीडिया की यह हिम्मत ही नहीं पड़ रही थी कि वह इस विवाद में शामिल हो। जब एक पत्रकार ने चैनल के मालिक से इस बारे में बात की तो मालिक पर उसकी प्रतिक्रिया यह हुई कि उसकी कुर्सी फट गई । मतलब कुर्सी में छेद हो गया। मालिक ने कहा इस छेद के अंदर झांक कर देखो। तुम्हें इसमें अपना भविष्य दिखाई देगा। पत्रकार ने छेद में झांका और वास्तव में उसका भविष्य दिखाई दिया दिया।

चैनल के मालिक ने कहा, अब तुम अगर इस मामले में कुछ करना ही चाहते हो तो स्वर्ग में जाकर गांधी जी को इंटरव्यू करो। पत्रकार गांधी जी के पास स्वर्ग में जा पहुंचा ।गांधी जी बैठे चरखा कात रहे थे ।उनसे पत्रकार ने पूछा, महात्मा जी आप के पुतले को गोली मारी गई है। आपको कैसा लग रहा है?

गांधी जी ने कहा, मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है।

पत्रकार ने पूछा, अच्छा क्यों लग रहा है?

गांधी जी ने कहा, इसलिए कि पहले उन्होंने एक निहत्थे को गोली मारी थी। और अब उन्होंने एक पुतले को गोली मारी है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि वे उसे गोली कभी नहीं मारेंगे जिसके हाथ में कोई हथियार होगा।

8.

गांधी जी से स्वर्ग में बताया गया कि आपको गोली मारने वाले आपको अपना शत्रु मानते हैं। गांधी जी ने कहा, इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।

पत्रकार ने पूछा, आपको कैसा लग रहा है महात्मा जी?

गांधी जी बोले, मुझे अच्छा लग रहा है।

पत्रकार ने पूछा, क्यों ?

गांधी ने कहा, इसलिए कि अंग्रेज भी मुझे शत्रु मानते थे... मेरे शत्रुओं को एक मित्र मिल गया है।

9.

गांधी के पुतले को गोली मारने वालों से पूछा गया कि आप गांधी को गोली क्यों मार रहे हैं? वे तो बहुत पहले मार दिए गए थे।

गांधी के पुतले को मारने वालों ने कहा, सब को यही भ्रम है।

- फिर

- गांधी को गोली तो ज़रूर मारी गयी थी पर वह मरा नही था।

- ये आप क्या कह रहे हैं?

- हम सच कह रहे हैं।

- तो फिर?

- हम लगातार मार रहे हैं।पर वह मरता ही नहीं।अगले साल फिर मारेंगे।

10

गांधी का पुतला बनाने वाले ने बहुत मेहनत से पुतला बनाया। जब पूरा पुतला तैयार हो गया तो उसने पुतले को चश्मा पहना दिया।

पुतले को गोली मारने वाले उत्तेजित हो गए। उन्होंने कहा यह चश्मा उतारो। गांधी को चश्मा नहीं पहनाना है ।

पुतला बनाने वाले ने कहा, वे तो चश्मा पहनते थे ।

उन्होंने कहा, पहनते थे और यही तो सबसे बड़ी बुराई थी।

- चश्मे से क्या बुराई% उससे तो साफ दिखाई देता है ।

- हां हम नहीं चाहते कि पुतले को कुछ साफ दिखाई दे।चश्मा हमें दे दो। इस चश्मे से बड़े काम लेना हैं।

- क्या काम लेना है?

- इसके दोनों शीशों को घिसना बाकी रह गया है।